संप्रेषण कौशल

इकाई – 2

समास (Compound)

बी.ए. सत्र – प्रथम

डा. विजय कुमार
राजकीय महाविद्यालय, पाडर
किश्तवाड़

इकाई – 4

समास (Compound)

समास का शाब्दिक अर्थ – जोडना या मिलाना। यह भाषा की विशेषता है कि वह विभिन्न रूपों को जोड़कर नए–नए शब्दों की रचना करती रहती है। जिस प्रकार किसी शब्द में प्रत्यय या उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनते हैं, उसी प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी नए शब्द बनते हैं। शब्द निर्माण की इस विधि को समास कहा जाता है।

1. समास की परिभाषा

'समास' वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।[1]

- समास तभी बनता है जब दोनों या सभी पद सार्थक हों।
- सामासिक शब्द में आये दो पदों में पहले पद को '**पूर्वपद**' तथा दूसरे पद को '**उतरपद**' कहते हैं।
- समास प्रक्रिया से बने पद को '**समस्तपद**' कहते हैं।
- '**समस्तपद**' के दोनों पदों को अलग–अलग करने की प्रक्रिया को '**समास–विग्रह**' कहते हैं,

  जैसे – गंगा + जल – गंगाजल – गंगा का जल

  (पूर्वपद) + (उतरपद) (समस्तपद) (समास विग्रह)

1. डॉ. रामप्रकाश द्विवेदी, मानक व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं लेखन, हितैशी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 103

2. समास के भेद

समास छह प्रकार के होते हैं –

1. अव्ययी भाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास[1]

1. अव्ययी भाव समास – जिस समास का पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं, जैसे –

पहचान – पहला पद ⟶ अनु; आ, प्रति, भर, यथा, आदि होता है।

पूर्वपद – अव्यय+ उतरपद = समस्तपद – विग्रह

प्रति + दिन = प्रतिदिन – प्रत्येक दिन

आ + जन्म = आजन्म – जन्म से लेकर

यथा + संभव = यथासंभव – जैसा संभव हो

अनु + रूप = अनुरूप – रूप के योग्य

भर + पेट = भरपेट – पेट भर के

प्रति + कूल = प्रतिकूल – इच्छा के विरुद्ध

---

1. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2015, पटना, पृ. 54

2. **तत्पुरुश समास** – जिस समास में बाद का अथवा उतरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक–चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदाहरण के लिए –

पूर्वपद + उतरपद = समस्तपद – विग्रह

राज + कुमार = राजकुमार – राजा का कुमार

धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ

(विग्रह) (समस्तपद)

नेत्र से हीन = नेत्रहीन

सभा के लिए भवन = सभाभवन

तत्पुरुष समास के भेद – विभक्तियों के नामों के अनुसार छह भेद हैं :–

(i) कर्म तत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष) – इसमें कर्म कारक की विभक्ति **'को'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
यश को प्राप्त	–	यश प्राप्त
सुख को प्राप्त करने वाला	–	सुख प्राप्त
माखन को चुराने वाला	–	माखनचोर

(ii) करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) – इसमें करण कारक की विभक्ति **'से'**, **'के द्वारा'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
नेत्र से हीन	–	नेत्रहीन
भय से आकुल	–	भयाकुल

शोक से ग्रस्त	–	शोकग्रस्त
सूर द्वारा रचित	–	सूररचित

(iii) संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) – इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति **'के लिए'** का लोप हो जाता है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
प्रयोग के लिए शाला	–	प्रयोगशाला
स्नान के लिए घर	–	स्नानघर

(iv) अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) – इसमें अपादान की विभक्ति **'से'** (अलग होने का भाव) लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
पथ से भ्रष्ट	–	पथभ्रष्ट
देश से निकाला	–	देश निकाला
धन से हीन	–	धनहीन
पाप से मुक्त	–	पापमुक्त

(v) संबंध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) – इसमें सम्बन्ध कारक की विभक्ति **'का', 'के', 'की'** लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
राजा का पुत्र	–	राजपुत्र
पर के अधीन	–	पराधीन
देश की रक्षा	–	देश रक्षा

(vi) अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) – इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति **'में', 'पर'** लुप्त हो जाती है; जैसे –

विग्रह	–	**समस्तपद**
शोक में मगन	–	शोक मग्न
आप पर बीती	–	आप बीती
गृह में प्रवेश	–	गृह प्रवेश
लोक में प्रिय	–	लोकप्रिय
धर्म में वीर	–	धर्मवीर
कला में श्रेष्ठ	–	कलाश्रेष्ठ[1]

3. कर्मधारय समास – कर्मधारय समास में पहला पद विशेशण और दूसरा विशेशण अथवा संज्ञा होता है।

विशेषण + संज्ञा = कर्मधारण समास। जैसे –

महा + कवि = महाकवि – महान है जो कवि

(पहला पद + दूसरा पद = समस्त पद – विग्रह)

नर + अधम = नराधम – अधम है नर जो

पीत + सागर = पीतसागर – पीत है जो सागर

(इस समास में एक शब्द उपमान और दूसरा उपमेय होता है)

4. द्विगु समास – जिस समास का पहला पद संख्यावाचक और दूसरा पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे –

---

1. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2015, पटना, पृ. 55

पहला पद + दूसरा पद = समस्त पद – विग्रह)

त्रि + योगी = त्रियोगी – तीन योगों का समाहार

दो + पहर = दो पहर – दो पहरों का समाहार

त्रि + फला = त्रिफला – तीन फलों का समाहार

5. **द्वंद्व समास** – जिसके दोनों पद प्रधान हों, दोनों संज्ञाएँ अथवा विशेषण हों, वहन द्वंद्व समास कहलायेगा। इसका विग्रह करने क लिए दो पदों के बीच **'और'** अथवा **'या'** जैसा योजक अव्यय लिखा जाता है।[1]

पहचान :– दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिह्न (–) का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए –

समस्त पद	–	**विग्रह**
रात–दिन	–	रात और दिन
माता–पिता	–	माता और पिता
सीता–राम	–	सीता और राम
दुःख–सुख	–	दुःख और सुख

6. बहुब्रीहि समास – इस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता बल्कि दोनों शब्द मिलकर एक नया अर्थ प्रकट करते हैं। जैसे पीताम्बर – इसके दो पद हैं – पीत + अम्बर। पहला **'विशेशण'** और दूसरा पद **'संज्ञा'** अतः इसे कर्मधाय समास होना चाहिए था परन्तु बहुब्रीहि में **पीताम्बर** का विशेष अर्थ पीत वस्त्र धारण करने वाला श्रीकृष्ण से लिया जाता है।

---

1. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, आधुनिक हिन्दी व्याकरण, भारतीय पुस्तक परिशद, नई दिल्ली, संस्करण – 2013, पृ. 145–146

सन्धि और समास में अन्तर

	सन्धि		समास
1.	सन्धि में दो वर्णों का योग होता है।	1.	समास में दो पदों का योग होता है।
2.	सन्धि के लिए वर्णों के मेल और विकार की गुंजाइश रहती है।	2.	समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिये जाते हैं।
3.	सन्धि के तोड़ने को 'विच्छेद' कहते हैं।	3.	समास का 'विग्रह' होता है।
4.	हिन्दी में सन्धि तत्सम पदों में ही होती है।	4.	समास संस्कृत, तत्सम, हिन्दी, उर्दू हर प्रकार के पदों में होता है

प्रश्न – अभ्यास

1. समास किसे कहते हैं? इसकी उपयोगिता क्या है?
2. 'द्वद्व' और 'अव्ययीभाव' समास की परिभाशा उदाहरण सहित लिखिए।
3. 'तत्पुरुष' और 'द्वन्द्व' समास में क्या भेद है, सोदाहरण समझाइए?
4. बहुब्रीहि और द्विगु समास में क्या–क्या अन्तर है, सोदाहरण बताइए?
5. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए, समास बताइए?

   राजपुरुष, प्रतिदिन, माखनचोर, चरणकमल, दोपहर, हस्तलिखित, लोकनाथ, चतुर्भुज